Vol. 12, Issue: 08, August: 2023
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

विनयपत्रिका में तुलसी की भक्ति भावना

प्रो. रश्मि कुमार
हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ

संक्षिप्त सार

तुलसी की भक्ति भावना में दास्य का प्राचुर्य है। तुलसी के प्रन्थों में भक्त चातक है तो भगवान आनन्द का घन । चातक पर घन जिस प्रकार उपल बरसाता है, नाना यातनाएं देता है, बार–बार उसकी एकनिष्ठता की परीक्षा करता है तथा चातक अपनी रट से टलता नहीं, आस्था बनाये रखता है और अन्त में मधुर जल की बूँदें प्राप्त करता है। भक्ति भावना अथवा प्रतिपाद्य की दृष्टि से विनयपत्रिका के दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में विविध देवी–देवताओं की स्मृतियाँ हैं तथा द्वितीय खण्ड में भक्त कवि के आत्माद्गार हैं। 'स्तुति–खण्ड' में कवि ने गणेश, सूर्य, शिव, देवी, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा सीता आदि की सतुतियाँ की हैं। इन स्तुतियों में भी भक्त का दास्यभाव ही वर्णित है। इन स्तुतियों में भी तुलसी की एक ही मांग है–'भगवान राम के चरण कमलों की रति प्रदान करो।''विनयपत्रिका' के सारे पद आत्मनिवेदात्मक शैली में भक्ति भावना से लिखे गये हैं। इन पदों में जहाँ–जहाँ कवि ने लौकिक जीवन तथा सांसारिक विवशताओं का चित्रण किया है वहाँ वैराग्य की प्रधानता हो गई है। तुलसी ने यत्र–तत्र सांसारिक मायाजालों से ग्रस्त जीव को भक्ति भावना के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करने का सन्देश दिया है। भक्त जब इन पदों का पाठ अथवा अध्ययन करता है तब उसके मन में वैराग्य तो उत्पन्न होता है परन्तु उसका हृदय भक्ति रस में गोते लगाने लगता है। वह संसार से वैराग्य न लेकर इसी संसार में रहता हुआ भक्तित्व के माध्यम से मुक्ति की।

शब्द संकेत : *तुलसीं, विनयपत्रिकां, भक्ति ; भावना ; वैराग्य*

१.विषय प्रवेश

'विनयपत्रिका' भक्ति का उज्ज्वल चिन्तामणि है। इस ग्रंथ का प्रत्येक पद, भक्ति–भावना से ही प्रेरित होकर लिखा गया है। तुलसी ने मानस में भगवद् प्रेम अथवा भक्ति के प्रवाह की व्यंजना इस प्रकार की है–

'कामहि नारि पिआरी जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम ।।'

तुलसीदास जी ने यह माना है कि भक्ति सब साधनों का फल है– **'सब कर फल हरि भगति सुहाई'** इसीलिये भक्ति–भावना के परिवेश में भगवान के प्रति अडिग आस्था एवं विश्वास का होना अनिवार्य है। बिना विश्वास के भक्ति का महात्म्य संभव नहीं है और जब तक भक्त अनन्य भाव से भगवान के प्रति निष्ठावान होकर आत्मसमर्पित नहीं हो जाता तब तक भगवान द्रवित नहीं होते–

'एक भरोसो एक बल, एक आस विश्वास।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास ।।'
'बिनु बिस्वास भगति नहि तेहि बिनु द्रवहिं न राम।'

स्पष्ट है कि तुलसी की भक्ति भावना में दास्य का प्राचुर्य है। तुलसी के प्रन्थों में भक्त चातक है तो भगवान आनन्द का घन । चातक पर घन जिस प्रकार उपल बरसाता है, नाना यातनाएं देता है,

बार–बार उसकी एकनिष्ठता की परीक्षा करता है तथा चातक अपनी रट से टलता नहीं, आस्था बनाये रखता है और अन्त में मधुर जल की बूंदें प्राप्त करता है। 'विनयपत्रिका' में तुलसी की विनयावलियाँ हैं।

तुलसी के राम सर्वव्यापक तथा पूज्य हैं। राम को सकल जगमय जान कर ही तुलसी ने उनका भक्त होना स्वीकर किया है–

'सकल विस्व–विदित, सकल–सुर सोवित,
आगम निगम कहैं रावरेई गुन ग्राम ।।
इहैं जानि तुलसी तिहारो जन भयो,
न्यारो कै गनिबो जहाँ गने गरीब गुलाम ।।'

तुलसी के ऐसे राम निर्गुण भी हैं और सगुण भी–

'अमल अनवद्य अद्वैत निर्गुण सगुन ब्रह्म सुमिरामि नर भूप रूप।'

इतना होने पर भी तुलसी की यह मान्यता रही है कि सगुण ब्रह्म ही भक्तों के दुखों को दूर करने वाला होता है, वहीं भक्त के दुखों का निवारण करता है। जब पृथ्वी पर पाप का घड़ा भर जाता है, आसुरी शक्तियाँ बढ़ने लगती हैं तब भगवान् अवतार लेते हैं–

'जब–जब जग–जाल व्याकुल करम काल,
सब खल भूप भये भूतल भरन ।
तब–तब तनु घरि भूमि भार दूरि करि,
थापे मुनि सुर साधु आस्त्रम बरन ।।'

भक्ति भावना अथवा प्रतिपाद्य की दृष्टि से विनयपत्रिका के दो खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में विविध देवी–देवताओं की स्मृतियाँ हैं तथा द्वितीय खण्ड में भक्त कवि के आत्माद्गार हैं। 'स्तुति–खण्ड' में कवि ने गणेश, सूर्य, शिव, देवी, गंगा, यमुना, काशी, चित्रकूट, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा सीता आदि की सतुतियाँ की हैं। इन स्तुतियों में भी भक्त का दास्यभाव ही वर्णित है। इन स्तुतियों में भी तुलसी की एक ही मांग है–'भगवान राम के चरण कमलों की रति प्रदान करो।' 'विनयपत्रिका' के सारे पद आत्मनिवेदात्मक शैली में भक्ति भावना से लिखे गये हैं। इन पदों में जहाँ–जहाँ कवि ने लौकिक जीवन तथा सांसारिक विवशताओं का चित्रण किया है वहाँ वैराग्य की प्रधानता हो गई है। तुलसी ने यत्र–तत्र सांसारिक मायाजालों से ग्रस्त जीव को भक्ति भावना के माध्यम से मुक्ति प्राप्त करने का सन्देश दिया है। मूलतः समूचा काव्य 'शान्तरस' का अनूठा संग्रह बन गया है किन्तु शान्तरस की निष्पत्ति में कवि की जो शुद्ध आत्माभिव्यक्ति है वह भक्ति भावना से ओत–प्रोत है। भक्त जब इन पदों का पाठ अथवा अध्ययन करता है तब उसके मन में वैराग्य तो उत्पन्न होता है परन्तु उसका हृदय भक्ति रस में गोते लगाने लगता है। वह संसार से वैराग्य न लेकर इसी संसार में रहता हुआ भक्तित्व के माध्यम से मुक्ति की। फलतः भक्त को भक्ति रस का आस्वाद प्राप्त होता है। इन पदों में तुलसी ने सांसारिक, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों का भावात्मक चित्रण किया है। इन तत्वों के मर्म को जानते ही पाठक का हृदय भाव विह्वल हो उठता है। तुलसी की विनयपत्रिका इन विकारों का उल्लेख करके राम के प्रति अनन्य अनुराग की प्रेरणा देती है–

संजय, तप, तप, नेम, धरम, व्रत, बहु भेषज समुदाई ।
तुलसीदास भव–रोग राम पद–प्रेम ही नहिं जाई ।।

"विनयपत्रिका' के भक्ति रस का स्थायी भाव ही 'राम–पद–प्रेम' है। इसी 'राम–पद–प्रेम' का बार–बार भक्तिभावना से उल्लेख करते–करते महाकवि राम के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं फलतः भगवान् राम को उनकी विनयावली के भाव–पुष्पों को अंगीकार करना पड़ता है–

'विहंसि राम को सत्य है, सुधि में हूँ लही है।'
'मुदित माथ नावत, बनी तुलसी अनाथ की, परी रघुनाथ हाथ सही है।'

भक्ति रस की दृष्टि से भावपक्ष के अन्तर्गत निम्न पद विशेषतः उल्लेखनीय है–

'ऐसी मूढ़ता या मन की'

परिहरि राम भगति–सुर–सरिता, आस करत ओसकन की ॥
धूम–समूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति धन की।
नहिं तहँ सीतलता न धारि, पुनिहानि होति लोचन की ॥
ज्यों गज–काँच विलोकि सेन जड़ छाँह आपने तन की।
टूटत अति आतुर अहार बस छति बिसारि आनन की ।।
कहाँ लौं कहाँ कुचाल कृपानिधि ! जानत हौं गति जन की।
तुलसीदास प्रभु हरहु दुसह दुख, करहु लाज निज पन की ।।"

यहाँ भगवान राम आल बन विभाव और भक्त आश्रय विभाव है। 'धूम–समूह' चातक, गज काँच आदि तथा प्रभु का अन्तर्यामी रूप दृष्टान्त के परिप्रेक्ष्य में उद्दीपन है। भक्त का नतमस्तक होना, भटकन, चिन्तावश मूढ़ बनना, विवशता आदि की व्यंजना वाली चेष्टाएँ अनुभाव हैं। आलस्य, ग्लानि, चिन्ता, दैन्य तथा धैर्य आदि संचारी भाव हैं। इन सबके संयोग से भगवान के प्रति भक्त के हृदय में जो 'राम–पद–प्रेम' रति पैदा होती है वही भक्ति रस है।

विनयपत्रिका' के अनेक पदों को पढ़ कर भक्त के हृदय में भक्ति भावनाप्रद भावोर्मियों का अपार सागर लहराने लगता है। तुलसी की दास्यभक्ति भावना प्रधान है। विनयपत्रिका में भगवान बड़े हैं, सर्वस्व हैं। राम छोटे हैं–

"राम सों बड़ो है कौन, मो सों कौन छोटो ?
राम सों खरो है कौन, मो सों कौन खोटो ?'

आचार्य शुक्ल ने इस पद के भावतत्व पर टिप्पणी करते हुए लिखा है–"सारी विनयपत्रिका का विषय यही है– राम की बड़ाई और तुलसी की छोटाई। दैन्यभाव जिस उत्कर्ष को गोस्वामी जी में पहुँचा है, उस उत्कर्ष को और किसी भक्त में नहीं।" ने राम की सर्वव्यापकता को लोक–जीवन में देखा था। विनयपत्रिका में राम का जो व्यक्तित्व चित्रित किया गया है वह लोक–रक्षक के साथ–साथ लोक रंजन का भी कारक है । इसी भावना से प्रेरित होकर कवि राम के चरणों में ही रति चाहता है। कवि को दूसरा कोई स्वार्थ अथवा स्पृहा अभीष्ट हैं ही नहीं। इसमें तो रागात्मकता ही है।

चहौं न सुगति, सुमति, संपति कछु रिधि– सिधि, विपुल बड़ाई ।
हेतु रहित अनुराग रामपद बढ़े अनुदिन अधिकाई ॥

२.साहित्यिक सर्वेक्षण

दीक्षिति,डॉ. राजपति (2009) ने लिखा है "शरणागति भक्ति का फल एवं माहात्म्य गोस्वामी जी ने बहुत प्रबल दिखाया है। उन्होंने अपने इष्ट देव के स्वरूप चित्रण में उनकी शरणागत वत्सलता का जितना मार्मिक, व्यापक और सूक्ष्म निर्देश किया है उतना किसी अन्य विशेषता का नहीं।

मिश्र,डॉ. रामचन्द्र (2018) के शब्दों में "राम के ऐसे असाधारण और महत्तम स्वरूप को तुलसी ने अपनी भक्ति का आलम्बन माना है। वह शक्तिशील और सौन्दर्य से युक्त हैं। ये तत्व प्राथमिक रूप में विद्यमान होने के कारण वह अलौकिक और दिव्य हैं। उनके ऐसे अप्रतिम होने के कारण ही उनकी महत्ताओं का गान करने में तुलसी ने गौरव और आश्रयस्वरूप अपने अभावों, पापों, लौकिक विचारों आदि का उल्लेख कर सुख और सन्तोष की अनुभूति की है।"

तुलसी की भक्ति भावना की प्रमुख विशेषता ही ऐसे भाव–तत्व हैं। विनय पत्रिका की भक्ति भावना में तुलसी का आराध्य में विश्वास और निष्ठा, आत्मसमर्पण, भक्त की दीनता तथा दास्य एवं राम नाम

का माहात्म्य का विशेष प्रतिपादन है।आराध्य में विश्वास और निष्ठा– भगवान राम के पारलौकिक सर्वशक्तिमान रूप 'विनयपत्रिका' के प्रत्येक पद में प्रतिपादित है। भक्त भगवान के इसी सर्वव्यापक रूप के प्रति भक्ति भाव से आसक्त हैं। भगवान राम सबसे बड़े हैं और भक्त सबसे छोटा है–

'राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो ।
राम सों खरो है कौन, मोसो कौन खोटो।'

जीव तथा ब्रह्म मूलतः अंग तथा अंगी हैं। भक्त को इस पर पूरा विश्वास है। वह मानता है कि प्रभु दयालु हैं तो भक्त दीन। प्रभु दानी हैं तो भक्त भिखारी । प्रभु पाप के पुंजों को क्षय करने वाले हैं तो भक्त पापी। प्रभु नाथ हैं तो भक्त अनाथ। प्रभु ब्रह्म हैं, भक्त जीव ! प्रभु ठाकुर हैं, भक्त नौकर हैं। प्रभु सब प्रकार के भक्त के हितैषी हैं। यद्यपि प्रभु तथा भक्त के बीच अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं परन्तु भक्त की पुकार यही है 'हे प्रभु ! जो नाता आपको अच्छा लगे मुझे उसी रूप में ग्रहण कीजिये–

'तू दयाल दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी ! तू पाप पुंज हारी।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मो सो।
मो समान आरत नहि, आरति हर तो सो।
ब्रह्म तू हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो।
तात– मात, गुरु, सखा तू सब विधि हितु मेरो।
तोहि मोहि नाते अनेक मानिये जो भावै।
ज्यों–ज्यों तुलसी कृपालु चरन सरन पावै ।।'

मात्र चरण–कमलों में शरण प्राप्त करके ही भक्ति करनी तुलसी को अभीष्ट है। यही तुलसी की दास्य–भक्ति है जिसका सर्वाधिक प्रतिपादन विनयपत्रिका में मिलता है–

'तुलसीदास भव–रोग रामपद–प्रेम–हीन नहिं जाई ।'
'रामचरन अनुराग–नीर बिनु मल अति नास न पावै।'
'तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन पर्यो।'

आत्मसमर्पण भक्ति भाव से प्रेरित होकर तुलसी ने भगवान् राम के चरणों में आत्मसमर्पण कर दिया है। बस अपने आपको सब प्रकार से असहाय, निरालम्ब पाकर मात्र प्रभु के सहारे ही छोड़ दिया है। यद्यपि भक्त का व्यक्ति अवगुणों की राशि है, पर जो है सो है ही। इसका उद्धार मात्र राम से ही संभव है। भगवान राम के विधु वदन को देखकर ही तो भक्त का मन प्रसन्न होता है। तुलसी कहते हैं बचपन से ही पिता, माता, भाई, गुरु, नौकर, मन्त्री आदि यही कहते हैं कि कभी भी भगवान के मुख पर क्रोध नहीं देखा। उनके चरण–स्पर्श से अहिल्या का उद्धार हो गया था। हनुमान उनकी सेवा में लगकर उपकृत हो गये थे। भक्तों पर आपने सदैव दया की है। जो एक बार भी आपको प्रणाम करता है और शरण में आ जाता है, आप सदा उसके यश का वर्णन करते हैं। ऐसे कोमल हृदय श्रीराम जी के गुण समूहों को समझ कर मेरे हृदय में प्रेम की बाढ़ आ गई है। हे तुलसीदास। इस प्रेमानंद के कारण तू अनायास ही श्रीराम के चरण–कमलों को प्राप्त करेगा–

सुनि सीतापति सील सुभाउ ।
मोद न मन, तन पुलक, नयन जल सो नर खेहर खाउ ।।
सिसुपन तें पितु, मातु, बंधु, गुरु, सेवक, सचिव, सखाऊ ।
कहत राम बिधु–वदन रिसौ हैं सपनेहुँ लख्यो न काउ द्यद्य
समुझि समुझि गुन ग्राम राम के, उर अनुराग बढ़ाउ ।
तुलसिदास अनयास राम पद पाड़ है प्रेम पसाउ ।

भक्त आत्मसमर्पण कर चुका है। वह भगवान के चरणों की रति को छोड़कर कहीं जाये भी तो भला कहाँ ? वह कौन से देवता हैं जिसे दीन अत्यधिक प्रिय हों। वह और कौन देवता है जो चुन–चुन कर नीचों का उद्धार करता हो। राम से इतर देवताओं के समक्ष तुलसी को आत्मसमर्पण से भला लाभ ही क्या ?

जाऊं कहाँ तजि चरन तुम्हारे
काको नाम पतित–पवन जग, केहि अति दीन प्यारे ।
कौन देव बराइ विरद–हित, हठि हठि अधम उधारे ।
खग मृग, व्याध, पषान, विटप जड़ जवन कबन सुर तारे।
देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज सब माया–बिबस विचारे ।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपी हारे । '

दास्य–भाव– 'सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिय उरगारि' दास्य भक्ति का मूलभूत सिद्धान्त है। विनयपत्रिका में तुलसी का आचरण ईमानदार दासवत् है। तुलसी को अपनी दीनावस्था को सूक्ष्मातिसूक्ष्म करते हुए यहाँ तक कह देते हैं–

'आपसे कहूँ सौ पिये मोहि जो पै अतिहि घिनात ।
दास तुलसी और विधि क्यों चरन परिहरि जात ।।'

भक्त तो राम पर अपने आपको न्योछावर कर देने के लिए दृढ़ निश्चय कर चुका है। भक्त तो कहता है– 'कानों से दूसरी बात नहीं सुनूँगा, जीभ से दूसरे की चर्चा नहीं करूँगा। नेत्रों को दूसरी ओर देखने से वर्जित करूँगा। मस्तक केवल भगवान राम को ही झुकाऊंगा। भगवान राम साथ प्रेम का नाता जोड़कर अन्य सभी नाते तोड़ दूँगा। स्वामी राम का दास कहलवा कर अपने कर्मों का सारा बोझ उन्हीं पर छोड़ दूँगा–

'जानकी जीवन की बलि जैहौं।छित कहै राम–सीय पद परिहरि अब न कहूँ चलि जैहाँ ॥
उपजी उर प्रतीति सपनेहु सुख, प्रभु–पद विमुख न पैहौं ।
मन समेत या तनके बासिन्ह इहै सिखावन दैहौं ।।
नातौ नेह–नाथ सों करि सब नातो नेह बहैहौं।
यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं ।।'

इसी दास्य–भाव तथा प्रभु की शक्ति, शील तथा प्रभुता के समक्ष श्रद्धावनत होकर भक्त अपने पाप–पुंज को बिखरेता हुआ आत्मोद्धार की कामना करता है–

'जानत हूँ निज पाप जलधि जिय, जल सीकर सम सुनत लगै।
रज सम पर अवगुन सुमेरु करि गुन गिरसम रजते निदशै।
तुलसिदास यह त्रास मिटै जब हृदय करहु तुम डेरो ।।'

तुलसी की इस दास्य–भक्ति में आत्मनिवेदन अपनी पराकष्ठा को पहुँचा हुआ है।

राम–नाम महिमा दृ तुलसी ने राम–नाम माहात्म्य को बहुत महत्व दिया है। भक्ति भावना की सबसे सरल तथा महत्वपूर्ण प्रणाली यही तो है। इस स्मरण भक्ति के विशिष्ट काव्यांश इस प्रकार हैं–

'राम भरोसो राम बल, रामनाम विस्वास ।

सुमिरि नाम मंगल कुसल माँगत तुलसीदास ॥

'राम कहत चल, राम कहत चलु राम कहत चलु भाई रे ।
नाहि तौ भव–बेगारि महँ परि हैं, छूटत अति कठिनाई रे ।'

मूलतः यह राम नाम की महिमा तुलसी काव्य की प्रमुख विशेषता है जिसे चरम विकास 'विनयपत्रिका' में मिला है।

३.अध्ययन पद्धति

यह आलेख मुख्य रूप से वर्णन एवं विश्लेषण पर आधारित है । साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति के आधार पर विभिन्न संस्थाओं, कार्यालयों एवं पुस्तकालयों से तथ्यों का संकलन किया गया है । वर्तमान अध्ययन मुख्य रूप से द्वैतियक स्रोत पर ही आधारित है।

Vol. 12, Issue: 08, August: 2023
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

४. निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भक्त प्रवर तुलसीदास भगवान को सर्वोपरि तथा सर्वशक्तिमान मानते हैं। 'विनयपत्रिका' में तुलसी का दास्यभाव ही प्रमुखता निर्दिष्ट है जिसमें भक्तपूर्णरूपेण समर्पित होकर, चातकवत् साधक बन कर भगवान राम के अनुग्रह की इच्छा करता है।तुलसीकृत 'विनयपत्रिका' भक्ति का अनूठा ग्रंथ होते हुए भी काव्य–सौष्ठव की दृष्टि से प्रौढ़ रचना है। 'विनयपत्रिका" के काव्यत्व को प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें काव्य, भक्ति तथा संगीत का अदभुत समन्वय है। 'विनय पत्रिका' भक्त के हृदय के आत्मोद्वार हैं। इस ग्रन्थ के पद विराट, उदात्त तथा महानु भावों का पुंज है।

संदर्भ स्रोत

१.शास्त्री, मालती (202)1विनयपत्रिका (विश्लेषण एवं मूल्यांकन), परिमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड, दिल्ली ।
२.नरदेव (2009) विनय – पत्रिका और तुलसीदास, साहित्य सेवा सदन, वाराणसी ।
३.मिश्रा, विजय शंकर(2015) विनय – पत्रिका में प्रपत्तिवाद,स्वाक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली ।
४.दीक्षित, डॉ. राजपति (2009) तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमण्डल लिमिटेडटढ़ , वाराणसी ।
५.मिश्र, रामचन्द्र (2018) काव्यदशः, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।